RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-01
January -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

भारत–अमेरिका सम्बन्ध : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

गौरव कुमार शर्मा

शोधार्थी, दक्षिण एशिया अध्ययन केन्द्र राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Jan 2020

Keywords
ईसाई मिशनरी, स्वतंत्रता संग्राम, महात्मा गांधी, रूजवेल्ट, क्रिप्स मिशन, गोलमेज सम्मेलन, लेंड लीज प्रोग्राम, इंडियन लीग ऑफ अमेरिका, द न्यूयार्क टाइम्स, फ्रेंडस ऑफ फ्रीडम फॉर इण्डिया।

ABSTRACT

भारत अमेरिका संबंधों की शुरूआत कोलम्बस की 1492 में की गई भारत यात्रा से होती है। सन् 1810 में अनेक ईसाई मिशनरियां भारत में स्थापित हुईं एवं 19वीं शताब्दी में अनेक अमेरिकी लेखकों ने भारत की सांस्कृतिक विरासत की सराहना की। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान दोनों देशों के संबंध काफी अच्छे रहे। 20वीं शताब्दी में लाला हरदयाल ने अमेरिका में गदर पार्टी की स्थापना की। स्वामी विवेकानंद ने भी अपने उद्‌बोधन से अमेरिका के लोगों को प्रभावित किया। महात्मा गांधी के अहिंसा दर्शन का भी अमेरिका जनमानस पर प्रभाव पड़ा।

संयुक्त राज्य अमेरिका एवं भारत के बीच ऐतिहासिक सम्बन्धों का प्रारंभ सन् 1492 से माना गया है। इस वर्ष क्रिस्टोफर कोलम्बस ने भारत के साथ व्यापार के नए रास्ते खोजने के लिये अमेरिका की खोज की। भारत–अमेरिका के बीच औपचारिक सम्बन्धों की शुरूआत भारत के स्वतंत्र होने के बाद मानी जाती है। इस समय भारत व अमेरिका के बीच अधिकारिक सम्बन्धों की शुरूआत हुई। अमेरिका की क्रांति के दौरान अमेरिकावासी भारत के साथ सैनिक व नाविक दोनों रूपों में जुड़े हुए थे जो अमेरिकी उपनिवेश तथा भारत दोनों जगह बसे हुए थे।[1]

18वीं शदी के अंतिम ढाई दशकों में अमेरिका के अनेक जहाजों से व्यापार करने के उद्‌देश्य से भारतीय बंदरगाहों पर अपनी पहुंच बनाई। सन् 1784 में यूनाईटेड स्टेट ऑफ फिलाडेल्फिया नामक जहाज पांडिचेरी पहुंचा। आगामी वर्षों में हाइड्रा तथा ग्रांड तुर्क नामक जहाज भारत भेजा। कानूनी रूप से भारत व अमेरिका के बीच व्यापारिक सम्बन्धों का प्रारंभ सन् 1794 में इंग्लैण्ड और अमेरिका के बीच हुई जेस की संधि से माना जाता है। सन् 1792 में अमेरिका के एक अधिकारी भारत में अपने व्यापारिक हितों के लिए नियुक्त किया गया। अमेरिका के बोस्टन के बेंजामिन जोए कलकत्ता में अमेरिका का पहला काउंसलेट नियुक्त किया गया। जो भी अमेरिकी व्यापारी भारत में आए उनकी रूचि सिर्फ भारत के साथ व्यापार करने में थी। भारत से जुड़ गए। जैसे ईसाई मिसनरियाँ पर्यटक तथा बुद्धिजीवी लोग प्रोफेसर क्विंसी के शब्दों में प्रथम विश्व युद्ध से पहले भारत के प्रति अमेरिका का ज्ञान अमेरिकी मिशनरियों, पर्यटकों के सामान्य ज्ञान तथा रूड्रियाड किपलिंग के काल्पनिक साहित्य पर निर्भर था। 19वीं सदी के प्रारंभ में जहाजी दौर में अमेरिकी व्यापार भारत के साथ महत्वपूर्ण हो गया था इसी दौरान भारतीय दरबार और महाराजाओं ने अमेरिका के सर्कस प्रदेश की यात्राएं की तथा ब्रिटिश सरकार और समाचार पत्रों के दृष्टिकोण से भारतीय लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त की।[2]

भारत मे ईसाई मिशनरियों का आगमन

सन् 1810 में 'अमेरिकन बोर्ड ऑफ कमिश्नर्स फोर फॉरेन मिशन' के गठन के साथ ही भारत में पहली ईसाई मिशनरी मिस्टर एण्ड मिसेज ह्यूडसन, मिस्टर एण्ड मिसेज नेवेल, मिस्टर एण्ड मिसेज नॉट, मिस्टर गोर्डन हॉल तथा मिस्टर रीच को सन् 1812 में भारत भेजा गया।[3]

इनको ईस्ट इण्डिया कंपनी की तरफ से भारत में स्थापित होने की अनुमति नहीं थी लेकिन सौभाग्य से वर्ष 1813 में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने एक नया चार्टर पारित किया जिसमें कहा गया कि ईसाई मिशनरियों को भारत में कार्य करने के लिए अनुमति प्रदान की जानी चाहिए। इस एक्ट ने स्थाई आधार पर अमेरिकी मिशनरियों को भारत में काम करने के लिए अनुमति प्रदान की। 1815 में अमेरिका मराठा मिशन स्थापित किया गया इन्हीं मिशनरियों की भारत में कार्य, भारतीय उपमहाद्वीप एवं उसके लोगों के निरीक्षण से प्राप्त ज्ञान अमेरिका वासियों के लिए पुख्ता सूचनाओं का प्राथमिक स्त्रोत था।

भारत में ईसाई मिशनरियों की प्रमुख रूचि विद्यालय स्थापित करने तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं में धार्मिक साहित्य को वितरित करने में रही थी। इन मिशनरियों का उद्‌देश्य ईसाई धर्म के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ाना था। ईसाई मिशनरियों ने अपनी गतिविधियां अनवरत रूप से जारी रखी तथा इनकी संख्या में धीरे–धीरे वृद्धि होती गई। भारत में सन् 1885 में ईसाई मिशनरियों की संख्या 139 थी जो 19वीं सदी के समाप्त होते–होते 1500 के आस–पास हो गई।[4] सन् 1922 तक ईसाई मिशनरियों की संख्या 2478 तक पहुंच गई।[5] इन ईसाई मिशनरियों ने अपनी धार्मिक गतिविधियों के लिए भारत

RRIJM 2015, All Rights Reserved

को उपयुक्त स्थान माना। विशेष रूप से गरीब लोगों में धार्मिक गतिविधियों का प्रचार–प्रसार किया। ईसाई मिशनरियों ने भारत एवं भारतीय समाज को अमेरिकावासियों के सामने गलत रूप में प्रस्तुत किया तथा भारत की समस्याओं को वास्तविक रूप से नहीं समझा। तथा मिशनरियों ने अमेरिका पहुंचकर भारत की अशिक्षा, गरीबी और अंधविशवास की निंदा की।

कुछ ईसाई मिशनरियों ने सन् 1897 से 1899 तक भारत में आए भीषण अकाल के समय मानवीय कार्य किए तथा अकाल से निपटने में भारतीयों की मदद की। मिशनरियों ने भारत को एक सीमित दृष्टिकोण से देखा।[6]

भारत अमेरिका सम्बन्ध और बौद्धिक वर्ग

19वीं सदी के मध्य में कुछ अमेरिकी लेखकों ने भारत की सांस्कृतिक विरासत की सराहना की स्टीफन एन.ए. ने लिखा है कि एमर्सन, बोरू, व्हाइटमैन, हॉपकिंस, लैंगमैन तथा व्हिटनी ने 19वीं सदी में भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति अमेरिकी लोगों के मन में सम्मान उत्पन्न किया।[7]

राल्फ वाल्डो इमर्सन को हिंदु साहित्य जैसे उपनिषद और भारतीय दर्शन के बारे में अच्छा ज्ञान था इन्होंने ''इण्डियन सुपरस्टीशियंस'' नामक कविता की रचना की तथा हार्बड विश्वविद्यालय में भारतीय विचारों एवं दर्शन के बारे में व्याख्यान दिया। हेनरी डेविड थोरों ने कई भारतीय ग्रंथों जैसे गीता, कालीदास की शकुंतला तथा द थियेटर ऑफ हिंदूज (दो खण्ड़ों में) आदि का अध्ययन किया। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत के दो प्रमुख बुद्धिजीवियों पी.सी. मजूमदार और स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका की यात्रा की। सन् 1883 में ब्रह्म समाज के नेता पी.सी. मजूमदार ने अमेरिका के कई शहरों में अपने व्याख्यान दिए तथा 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व प्रसिद्ध धर्म संसद में स्वामी विवेकानन्द के साथ भाग लिया।

कुछ भारतीयों ने अमेरिका में इण्डियन होमरूल नामक संस्था स्थापित की और फिर उन्होंने दो संस्थाएं भी बनाई।

नई इंडियन लीग ऑफ अमेरिका और नेशनल कमेटीज फोर इंडियाज फ्रीडम। अमेरिका के कुछ प्रमुख लोगों ने इन नेताओं को अपना समर्थन दिया जिनमें विलियम जेनिंग्स बियाँ का नाम उल्लेखनीय है जो बाद में राष्ट्रपति विल्सन की केबीनेट में मंत्री हो गया। इस श्रृंखला में हम कुछ और नामों का भी उल्लेख कर सकते हैं जैसे रेव जोन हेन्स होन्स, एन वाल्डविन आदि।[8]

ऐसे वातावरण में ऐसे बहुत से लोग इस आंदोलन से जुड गए जो अमेरिकी नागरिक हो गए या वहां बसे हुए थे जैसे सीलेन्द्र नाथ घोष, धनगोपाल मुखर्जी, सैयद हुसैन, हरीदास मजूमदार, एम.एन. रॉय, बी.के. सरकार, आर.एल. वाजपेयी और किशन लाल श्रीदनारनी।

हर्ष की बात है कि प्रमुख अमेरिकी बुद्धिजीवियों और पत्रकारों ने भी उनका साथ दिया।[9]

मायरोन. एच. फेल्प्स के नेतृत्व में एक संगठन बना जिसका नाम सोसायटी फोर दी एडवांसमेन्ट ऑफ इण्डिया था। उस समय लंदन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखा काम कर रही थी जिसे वेडरबर्न चला रहे थे इसलिए इन दोनों संस्थाओं के बीच निकट संबंध स्थापित हो गए। 1914 में प्रथम महायुद्ध शुरू होने के बाद स्थिति में कुछ परिवर्तन आ गया अमेरिकी सरकार ने गदर पार्टी के खिलाफ कार्यवाही शुरू कर दी क्योंकि लाला हरदयाल गुप्त रूप से जर्मनी की सहायता पर निर्भर रहना चाहते थे इसीलिए गदर पार्टी के कुछ प्रमुख सदस्यों के खिलाफ अदालती कार्यवाही शुरू की गई लेकिन पर्याप्त साक्ष्य नहीं होने के कारण हिंदु षडयंत्र काण्ड में तारकनाथ दास, भाई परमानन्द जैसे कार्यकर्ताओं को मुक्त कर दिया गया।[10]

अमेरिकी सरकार ब्रिटिश सरकार के साथ अच्छे संबंध बनाए हुई थी इसलिए अमेरिकी प्रशासन ने इन क्रांतिकारियों को पूरा समर्थन नहीं दिया इसके पीछे यही कारण था कि ये क्रांतिकारी लोग गुप्त रूप से जर्मनी की सहायात पर निर्भर रहना चाहते थे। लेकिन 1920 के बाद ये स्थिति सुधर गई अमेरिकी बुद्धिजीवियों ने महात्मा गांधी के अहिंसा और असहयोग के कार्यक्रमों को चलाया। इस स्तर पर अत्यन्त उल्लेखनीय बात यह है कि अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन के प्रयासों के फलस्वरूप 1920 में जिनेवा में राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई और यद्यपि सीनेट के विरोध के कारण अमेरिका इस अंतर्राष्ट्रीय संघटन में शामिल नहीं हो सका लेकिन भारत को इसकी सदस्यता मिली, भारत इसका सदस्य बन गया जो कठोर अर्थ में प्रभुता संपन्न राज्य भी नहीं था।[11]

जब 1928 में भारत में साइमन कमीशन आया जिसका भारत के राष्ट्रीय नेताओं ने बहिष्कार किया और तब ब्रिटिश सरकार ने सत्याग्रहियों का क्रूरता से दमन किया जिसके कारण लला लाजपतराय शहीद हो गए। अमेरिकी अखबारों ने इन दमनकारी कार्यों का विरोध किया और तत्कालीन प्रधानमंत्री वेल्डविन भारत मंत्री वर्केनहेड और आयोग के अध्यक्ष जॉन साइमन के भारत के प्रति असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार की निंदा की।

24 जून 1930 को क्लीवलैण्ड प्लेन डीलर ने साइमन कमीशन की रिपोर्ट की आलोचना की ओर यह टिप्पणी की कि 300 पृष्ठों की रिपोर्ट में कहीं भी नहीं दिया गया है कि भारत को कब स्वराज्य दिया जाएगा। 1920 के बाद भारत में महात्मा गांधी का नेतृत्व उभरा। उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह की तकनीक से आंदोलन को एक नई दिशा दी और मध्यमवर्गीय आंदोलन को जन आंदोलन में बदल दिया।[12]

जब 1930 में गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन या नमक सत्याग्रह चलाया। अमेरिका के विशाल जन समूह का गांधी को समर्थन प्राप्त हुआ। अमेरिका के कई बड़े अखबारों ने

अपने मुख पृष्ठ पर इस आंदोलन को जगह दी। अमेरिकी पत्रकारों ने इसकी भूरी–भूरी प्रशंसा की। एक अखबार वल्टीमोरसन ने टिप्पणी की कि आज दुनियां में ऐसा कोई दूसरा नेता नहीं है जो नेतृत्व के सभी पुराने यंत्रों को छोड़कर ऐसा रास्ता अपनाएं और उस जन आंदोलन को चलाएं।

क्लेवलैण्ड प्लेन डीलर में कहा गया कि गांधी के पास ना शस्त्र है ना उसे शस्त्र चाहिए उसके पास सैन्यवाद की कोई सामग्री नहीं है।

न्यूयार्क के एक प्रमुख पादरी जॉन हेंस ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड को लिखा की वो गांधी जी के साथ कोई सम्मानजनक समझोता करें।[13]

ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने लंदन में गोलमेज सम्मेलनों का आयोजन किया ताकि भारत की संवैधानिक समस्या का समाधान किया जा सके। जनवरी 1931 में पहले गोजमेज सम्मेलन का अंत हुआ जिसमें कोई निर्णय नहीं हुआ क्योंकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने उसमें भाग नहीं लिया था। इस सम्मेलन की असफलता पर अमेरिकी पत्रकारों ने खेद व्यक्त किया। उस सयम यह बात चल रही थी कि भारत को औपनिवेशिक दर्जा दिया जाए लेकिन इस बिंदू पर भी पहले गोलमेज सम्मेलन में कोई सहमती नहीं बन सकी। फ्लेडेल्फिया इंक्वायरर में यह टिप्पणी की गई कि अभी भारत को औपनिवेशिक दर्जा मिला नहीं है इसलिए स्वतंत्रता की बात करना ही बहुत दूभर है। सितम्बर–अक्टूबर 1931 में लंदन में दूसरा गोलवेज सम्मेलन हुआ। जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भाग लिया लेकिन महात्मा गांधी के भाषण के बाद भी कोई निर्णय नहीं हो सका इसलिए यह सम्मेलन भी विफल हुआ तब न्यूयार्क टाइम्स में यह टिप्पणी की गई कि ''यह सब भारतीय नेताओं के बीच घोर मतभेद के कारण हुआ।''[14]

1935 के बाद अंतर्राष्ट्रीय स्थिति तेजी से बिगड़ने लगी थी क्योंकि इटली के अधिनायक मुसोलिनी जर्मनी के अधिनायक हिटलर अपने सम्राज्यवादी पथ पर चल रहे थे जिससे विश्व युद्ध का खतरा मंडरा रहा था। भारत के राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता इन अधिनायकवादियों की गतिविधियों की आलोचना कर रहे थे इसलिए अमेरिकी नेताओं की भारत के प्रति सहानुभूति सुदृढ़ हो गई। 1937 में इंडियन लीग ऑफ अमेरिका स्थापित हुई जिसके अध्यक्ष मिस्टर चेकर थे। और जिनके सेक्रेटरी प्रोफेसर हरीदास मजूमदार थे। बाद में जे.जे. सिंह इसके अध्यक्ष हो गए अनेक प्रमुख अमेरिकी लोगों ने अपने को इस संस्था से जोड़ा जिनके नाम हैं जस्टिस विलियम ओ डगलस, सीनेटर हूबर्ट. एच हम्फरी, सीनेटर फिलिप रैंडोल्फ, हेनरी लुइस अल्बर्ट आंइस्टीन।[15]

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका को भारत के महत्व का आभास था। अतः यह काल आधिकारिक रूप से भारत–अमेरिकी संबंधों की शुरूआत माना जाता है। इससे पहले भारत–अमेरिका संबंधों के राजनैतिक संपर्क का माध्यम ब्रिटेन था। भारत के अमेरिका से दूर होने के कारण अनेक अमेरिकी अपरिचित थे लेकिन भारत पहुँचकर अनेक अमेरिकियों ने अपनी सेवाएँ प्रदान की और भारत के बारे में जानकारी प्राप्त की।

वास्तव में जब 1939 में दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ तब भारत के प्रति अमेरिकी सहानुभूति ने बहुत स्पष्ट रूख धारण कर लिया पर्ल्स.एस.वक, वेंण्डल बिल्की, ए. वालास जैसे नेताओं ने गांधीजी और नेहरू के विचारों को सराहा। एक पत्रकार लुई फिशर ने गांधीजी के संदेश को राष्ट्रपति रूजवेल्ट तक पहुंचाया। 5 जनवरी 1940 को नेहरू ने एडवर्ड थॉम्पसन को लिखा ''कि हो सकता है मुझे इंग्लैण्ड और अमेरिका में जाकर अपने आंदोलन के लिए सहानुभूति का संयोजन करना पड़े।''

14 अगस्त 1941 को अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल ने एक महत्वपूर्ण घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए जिसका नाम अटलांटिक चार्टर है इसमें यह आश्वासन दिया गया कि युद्ध के बाद गुलाम देशों को स्वतंत्र कर दिया जाएगा। इसने भारतीय नेताओं को बहुत उत्साहित कर दिया लेकिन जब महात्मा गांधी जवाहर लाल नेहरू, मौलाना आजाद ने यह प्रश्न उठाया कि क्या अटलांटिक चार्टर भारत पर लागू होगा तो ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल ने इन्हें यह कहकर निराश कर दिया कि उन्हीं देशों को स्वतंत्र किया जाएगा जो उस समय शत्रुओं के अधीन थे।

जापानियों द्वारा 7 दिसम्बर 1941 को अमेरिका के पर्ल हार्बर पर हमला बोल देने के बाद तो अमेरिका भी प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में शामिल हो गया। 15 फरवरी, 1942 को जब सिंगापुर भी जापानियों के हाथों में चला गया तो अमेरिका ने ब्रिटिश सरकार पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से कोई संतोषजनक समझौता करने पर जोर देना प्रारंभ कर दिया।

जापानी सेनाओं ने सिंगापुर से लेकर रंगून तक सारे क्षेत्र को जीत लिया था इसलिए अमेरिकी प्रशासन को यह चिंता हुई कि युद्ध जीतने के लिए भारतीयों का सहयोग अति आवश्यक होगा। प्रधानमंत्री चर्चिल ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि भारत को स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती तो कांग्रेस के नेताओं ने भी यह घोषित कर दिया कि वे इस युद्ध में ब्रिटिश सरकार को कोई सहयोग नहीं देंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने इस गंभीर स्थिति को समझा और ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल को सुझाव दिया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से तुरन्त बात की जाए।

अमेरिकी प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल को 10 मार्च 1942 को एक पत्र भेजा और भारतीय समस्या के प्रति अपनी चिंता व्यक्त की और लिखा कि ''यद्यपि इस मामले से मेरा कोई मतलब नहीं है तो भी मैं समस्या के समाधान में सहायता करने के लिए सहर्ष प्रस्तुत हूँ।'' ब्रिटिश सरकार ने स्टेफर्ड क्रिप्स को भारतीय नेताओं के साथ मतभेद दूर करने और पूर्ण स्वतंत्रता को दृष्टि में रखकर अंतरिम व्यवस्था करने के बारे में समझौता करने के लिए भारत भेजा।

यह मिशन कोई भी समझौता करने में असफल रहा। 11 अप्रैल को चर्चिल के नाम अपने संदेश में प्रेसीडेंट रूजबेल्ट ने यह अनुरोध किया, ''रूजवेल्ट समझौता वार्ता को भंग होने से बचाने के लिए एक और प्रयत्न किया जाए। अमेरिकी जनता यह नहीं समझ पा रही है कि ब्रिटिश सरकार युद्ध के बाद भारत के विभिन्न भागों को ब्रिटिश साम्राज्य की अधीनता से मुक्त करने के लिए तैयार है तो युद्ध के नियम उसे स्वशासन देने के लिए क्यों राजी नहीं होती।''

25 जुलाई 1942 को अमेरिकी राष्ट्रपति रूजबेल्ट ने चीन के शासक च्यांग काई शेक से ब्रिटेन और भारत से इस समस्या का शांतिपूर्ण समाधान ढूंढने की अपील की। रूजवेल्ट ने युद्ध प्रयत्नों के संदर्भों में भारतीय समस्या में अमेरिका की गहरी रूचि का उल्लेख करते हुए अमेरिका की आधारभूत नीति का निम्न शब्दों में उल्लेख किया, ''अपनी दीर्घकालिक नीति के अनुरूप तथा अटलांटिक – घोषणा पत्र में प्रतिपादित सिद्धांतों के आधार पर अमेरिका स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए उत्सुक सभी लोगों के स्वाधीन होने में गहरी रूचि रखता है। अमेरिकी सरकार के स्पष्ट कार्यों और उद्‌गारों के बारे में किसी के भी हृदय में कोई संदेह और भ्रम उत्पन्न नहीं हो सकता।''

हम ब्रिटिश सरकार और गांधी को निर्णय मानने के लिए बाध्य नहीं कर सकते, हम उनके मित्र हैं अगर हमारी सहायता की जरूरत पड़ी तो हम उनकी मदद करेंगे।

भारत की समस्या के प्रति रूजवेल्ट का दृष्टिकोण, न्याय और स्वतंत्रता का समर्थन करने वाली अमेरिका की परंपरागत नीति के अनुरूप था।

भारत की स्वतंत्रता को निकट लाने के लिए रूजवेल्ट ने अथक प्रयास किए दोनों देशों के मध्य ठोस एवं घनिष्ठ संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी इस नीति पर आने वाली सभी सरकारों ने विचार किया।

भारतीय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम और भारत के स्वाधीन होने के उपरांत, अमेरिका की महत्वपूर्ण भूमिका के संबंध में जो उद्‌गार प्रकट किए, उनसे यह सिद्ध होता है कि भारत के स्वाधीनता संग्राम के प्रति अमेरिकी जनता और अमेरिकी सरकार की सहानुभूति कितनी अधिक थी।

1940 में जब भारत का स्वधीनता संघर्ष बहुत नाजुक दौर से गुजर रहा था तो नेहरू ने अमेरिका में अपने पत्र में लिखा था – ''यद्यपि हम इस बात को पूरी तरह अनुभव करते हैं कि हमें भारत का स्वाधीनता संघर्ष यहीं इसी भूमि पर लड़ना है और यहीं उस पर विजय प्राप्त करनी है फिर भी हम अपने स्वाधीनता–संघर्ष में अमेरिकी जनता की सहानुभूति की बहुत अधिक कद्र करते हैं। आज अमेरिका विश्व का सबसे अधिक सम्पन्न लोकतांत्रिक देश है और इसमें मुझे तनिक भी संदेह नहीं कि अंतर्राष्ट्रीय मामलों को नया रूप देने में वह उल्लेखनीय भूमिका निभाएगा, और चूंकि भारत में हम लोग एक लोकतंत्र और स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, अतः यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि हम अमेरिका से कई रूपों में सहानुभूति और समर्थन की आशा करते हैं।[16]

1945 के ग्रीष्म काल में दूसरा महायुद्ध समाप्त हो गया। इटली, जर्मनी, जापान की फॉसीवादी शक्तियां पराजित हो गई अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस जैसे देश विजयी हुए। अब अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र संघ का निर्माण हुआं अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को नगर में 50 देशों का सम्मेलन हुआ और तब अक्टूबर 1945 में भारत उसका मौलिक सदस्य बन गया। अब भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता मिल गई यद्यपि भारत पूर्ण प्रभुता संपन्न राष्ट्र नहीं था यह सब ब्रिटिश प्रयासों के कारण हुआ जब 1946 में भारत में खाद्य संकट पैदा हुआ तो अमेरिका की फैमीन इमरजेंसी कमेटी ने इस और ध्यान दिया। और पूर्व राष्ट्रपति हर्बर्ट हूवर को भारत भेजा जिसने मई 1946 में भारत की सरकार के साथ एक महत्वपूर्ण समझौता किया। लेकिन उस समय देश में चल रहे सांप्रदायिक दंगों के कारण स्थिति बहुत बिगड़ गई। यही कारण है कि देश का विभाजन हुआ।

महात्मा गांधी ने 1942 में करो या मरो आंदोलन चला दिया। हजारों महिला–पुरूषों ने इस आंदोलन में भाग लिया तथा 15 अगस्त 1947 को भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की और विश्व पटल पर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा।

लुईस माउन्टबेटन जो कि भारत में गर्वनर जनरल थे, को बधाई संदेश भेजते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रूमैन ने लिखा ''हम स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्रों के विश्व समुदाय में भारत के नए और उच्च स्तर का स्वागत कर रहे हैं ताकि भारत के साथ मित्रता निरन्तर जारी रहे, विश्व समाज के संघर्ष में आपसी विश्वास और सम्मान में भारत प्रथम होगा। भारत ने अनेक गंभीर समस्याओं का सामना किया है इसके पास विशाल संसाधन है जिनसे ये देश आगे बढ़ेगा तथा भारत के लोग अमेरिका के प्रति मित्रता का भाव रखेंगे तथा दोनों देशों के सहयोग और सौहाद्रपूर्ण संबंध बनेंगे।[17]

सारांशतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अमेरिका ने खुले तौर पर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन किसी मंच से नहीं किया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब अमेरिका के पर्लहार्बर पर जापान ने हमला किया तो अमेरिका चिंतित हो उठा तथा अमेरिका ने दक्षिण पूर्व एशिया में अपने स्वार्थों की पूर्ति करने के लिए भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में रूचि ली। अमेरिका के स्वतंत्रता आंदोलन से भारत ने प्रेरणा ग्रहण की।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूची

1. डब्ल्यू. नॉर्मन ब्राउन, द यूनाइटेड स्टेट्स एण्ड इण्डिया एण्ड पाकिस्तान (कैम्ब्रिज, मास, 1963) 361
2. क्विन्सी राइट, ''इन्ट्रोडक्शन'', इन हरनाम सिंह, द इण्डियन नेशनल मूवमेंट एण्ड अमेरिकन ओपिनियन (डेल्टी, 1964) Xi
3. डी.सी. कमोजी, ''अमेरिकन क्रिश्चियन मिशंस इन इण्डिया इन द नाइन्टीन्थ सेन्चुरी, 'मॉडर्न रिव्यू (कैलकटा)। (जुलाई 1964) 43
4. एल. नटराजन, अमेरिकन शैडो ओवर इण्डिया (बॉम्बे 1932) 8
5. आर.एस. गुप्ता, फॉरेन अफेयर्स रिपोर्टस (न्यू डेल्टी), (मई, 1969)36
6. हे एन. स्टीफन, '' रवीन्द्र नाथ टैगोर इन अमेरिका, '' अमेरिकन क्वार्ट रली (फाल 1962) 439
7. उपरोक्त
8. उपरोक्त
9. न्यूयार्क टाइम्स, 3 अप्रैल 1917, कोटेड इन हरनाम सिंह, एन.2, 60
10. नटराजन, एन. 4, 11–12
11. एस.सी. तिवारी, पृ.सं. 9
12. क्लेवलैण्ड प्लेन डीलर, 24 जून 1930, कोटेड इन हरनाम सिंह, एन.2, 278
13. न्यूयार्क टाइम्स, 20 जून, 1930, कोटेड इन हरनाम सिंह, एन.2, 309
14. एस.सी. तिवारी, पृ.सं. 13
15. पी.के. बनर्जी, ''इंण्डिया एण्ड यू.एस. : एन अलायन्स ऑफ वैल्यूज'', टू डिकेडस ऑफ इंण्डो–यू.एस. रिलेशन्स (बोम्बे, 1969), पृ.सं. 161
16. एस.सी. तिवारी, पृ.सं. 14–19
17. उपरोक्त

RRIJM 2015, All Rights Reserved